ALL RIGHTS RESERVED
सर्वाधिकार सुरक्षित

FO-FB/CC/M/2017-29

2018

हिन्दी भाषा और साहित्य

समय : 3 घण्टे

पूर्णांक : 300

अनुदेश :

- सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।
- प्रश्न-पत्र दो खण्डों में विभाजित है।
- प्रत्येक खण्ड से तीन-तीन प्रश्नों को चुनते हुए कुल छः प्रश्नों के उत्तर दें।
- परीक्षार्थी यथासम्भव अपने शब्दों में ही उत्तर दें।
- एक ही प्रश्न के विभिन्न भागों के उत्तर अनिवार्य रूप से एक साथ ही लिखे जाएँ तथा उनके बीच में अन्य प्रश्नों के उत्तर न लिखे जाएँ।

खण्ड—क

1. मध्यकाल में अवधी भाषा का साहित्यिक भाषा के रूप में विकास पर प्रकाश डालिए।

2. अपभ्रंश और प्रारंभिक हिन्दी की व्याकरण संबंधी और शाब्दिक विशेषताओं की उदाहरण सहित विवेचना कीजिए।

3. हिन्दी की प्रमुख उपभाषाओं का परिचय देते हुए उनके पारस्परिक संबंधों पर प्रकाश डालिए।

4. स्वतंत्रता के बाद भारत संघ की राजभाषा के रूप में हिन्दी के विकास पर निबंध लिखिए।

5. हिन्दी की नई कविता की विभिन्न प्रवृत्तियों पर प्रकाश डालिए।

6. आचार्य रामचंद्र शुक्ल के आलोचना-सिद्धांतों पर प्रकाश डालिए।

खण्ड—ख

7. निम्नलिखित अवतरणों की संदर्भ-प्रसंग सहित व्याख्या कीजिए :

(क) दुलहनी गावहु मंगलचार,
हम घरि आए हो राजा राम भरतार॥
तन रत करि मैं मन रत करिहूँ पंचतत्त बराती।
रामदेव मोरें पाँहुनें आये मैं जोबन मैं माती॥
सरीर सरोवर बेदी करिहूँ, ब्रह्मा वेद उचार।
रामदेव संगि भाँवरी लेहूँ धनि धनि भाग हमार॥
सुर तेतीसूँ कौतिक आये, मुनिवर सहस अठ्यासी।
कहै कबीर हँम ब्याहि चले हैं, पुरिष एक अबिनासी॥

(ख) खेती न किसान को, भिखारी को न भीख, बलि
बनिक को बनिज न चाकर को चाकरी।
जीविका-बिहीन लोग सीद्यमान, सोचबस,
कहैं एक एकन सों "कहाँ जाई, का करी?"
वेद हू पुरान कही, को कहू बिलोकियत,
साँकरे सबै पै राम रावरे कृपा करी।
दारिद-दसानन दबाई दुनी दीनबंधु।
दुरित-दहन देखि 'तुलसी' हहा करी॥

8. निम्नलिखित अवतरणों की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए :

(क) धन्ये, मैं पिता निरर्थक था,
कुछ भी तेरे हित न कर सका।
जाना तो अर्थागमोपाय,
पर रहा सदा संकुचित काय
लख कर अनर्थ आर्थिक पथ पर
हारता रहा मैं स्वार्थ-समर
शुचिते पहना कर चीनांशुक
रख सका न तुझे अतः दधिमुख।

(ख) अब अभिव्यक्ति के सारे खतरे
उठाने ही होंगे।
तोड़ने होंगे ही मठ और गढ़ सब
पहुँचना होगा दुर्गम पहाड़ों के उस पार
तब कहीं देखने मिलेगी हम को
नीली झील की लहरीली थाहें
जिसमें कि प्रतिपल काँपता रहता
अरुण कमल एक
धँसना ही होगा
झील के हिम-शीत सुनील जल में।
जादुई झील को करनी ही होगी मेरी प्रतीक्षा।

9. 'गोदान' के आधार पर किसान-जीवन की समस्याओं पर प्रकाश डालिए।

10. 'अँधेर नगरी' के आधार पर सामाजिक-राजनीतिक अव्यवस्था का चित्रण कीजिए।

11. पठित निबंधों के आधार पर आचार्य रामचंद्र शुक्ल की निबंध-कला की समीक्षा कीजिए।

12. 'शेखर : एक जीवनी' के नायक का चरित्र-चित्रण कीजिए।

★ ★ ★